ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आयुर्वेद चिकित्सा में उपयोगी पौधे (बारीगढ़ एवं लवकुशनगर ब्लाक के विशेष सन्दर्भ में)

एस0 एस0 अहिरवार
सहायक अध्यापक,
वनस्पति विभाग,
शासकीय महाविद्यालय,
महाराजपुर

रविन्द्र सिंह
प्रोफेसर,
लाइफ साईंस विभाग,
महात्मा गांधी ग्रामोदय
विश्वविद्यालय,
चित्रकूट

एम0 एल0 अहिरवार
सहायक अध्यापक,
वनस्पति विभाग,
गर्वमेन्ट हाईस्कूल सेकेण्डरी स्कूल,
सिन्धपा, छतरपुर, मध्य प्रदेश

सारांश

किसी भी बीमारी के समय रोग ओर रोगी का घनिष्ट सम्बन्ध होता है। वर्तमान में बढ़ता प्रदूषण एवं बढ़ती जनसंख्या, अल्प एवं अनियमित वर्षा तथा बदलते परिवेश के कारण पर्यावरण में अनेक रोगाणुओं ने अपना वर्चस्व बना लिया है। आज मानव पूरी तरह से स्वास्थ्य को लेकर चिन्तित एवं परेशान है। जिसके कारण उसे चिकित्सा की आवश्यकता पड़ती है। अंग्रेजी चिकित्सा आम लोगों के लिए महगी पड़ती है तथा उसके कई साइड इफेक्ट्स रोगी को भुगतने पड़ते है। अतः सरल तथा सस्ते परम्परागत आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा रोगों का इलाज खोजा गया जो बहुत ही उपयोगी हुआ। बुन्देलखण्ड क्षेत्र अनेके प्रकार की जड़ी बूटियों तथा जेव विविधता का भण्डार है, तथा अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में पुराने समय के वैद्य, हकीम आयुर्वेदाचार्य एवं अनुभवशील लोग मौजूद है जो मानव एवं पशुओं का इलाज औषधीय पौधों के उपयोग द्वारा करते आ रहे है। बुन्देलखण्ड के छतरपुर जिले के अन्तर्गत बारीगढ़ एवं लवकुश नगर ऐसे विकासखण्ड क्षेत्र है जहॉ पर पहाड़ों नदी नालों तथा घने जंगलों की अधिकता है जहॉ पर अनेक प्रकार के औषधीय पौधे पाये जाते है।

मुख्य शब्द : वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, परम्परागत, बुन्देलखण्ड, गौरिहार, बारीगढ़ चिकित्सा।

प्रस्तावना

प्राचीन समय से ही मानव विभिन्न प्रकार के रोगों पर नियंत्रण पाने के लिये औषधीय पौधों की खोज में लगा रहा है। भारत के ऋषि, मुनि हिमालय एवं घने जंगलों में गुफाओं एवं कन्दराओं में रहते थे जहां पर केवल जंगली वातावरण जड़ी बूटियां एवं अन्य प्रकार के आश्रय जंगल से ही प्राप्त करते थे।

प्राचीन मानव जातियां भी आदिवासियों के रूप में जंगलों में रहती थी तथा आज भी रहती है। आदि मानव के लिए जंगल ही आवास, भोजन और चिकित्सा, मनोरंजन का साधन था। प्राचीन ऋषि, मनीषि जंगली जड़ी बूटी का उपयोग मानव एवं पशु चिकित्सा में करते थे लगातार प्रयोग करते रहने से उन्होंने पौधों की उपयोगिता एवं औषधीय महत्वों का अनुभव प्राप्त किया तथा प्राचीन वेदों में औषधीय पोधों का समावेश किया। त्रेता युग में पुराणों से पता चलता है कि लंका में शुशेन बैद्य थे जिन्होने संजीवनी बूटी का गहन अध्ययन किया था जिस बूटी में मुर्छित एवं मृत्यु की गोद में जा रहे प्राणियों को पुनः जीवित करने का गुण होता था देवताओं के वैद्य अस्वनी कुमार एवं धनवन्तरी का नाम भी पुराणों में मिलता है। जिससे सिद्ध होता है कि देवता भी बीमार हुआ करते थे ऋग्वेद के प्राचीन प्रमाण में पौधों की प्रशंसा का विवरण मिलता है। चीन में करीब 4000 बी0 सी0 के पूर्व के प्रमाण में औषधीय पौघों का वर्णन मिलता है। ग्रीस (यूनान) के महान दार्शनिक ''थियो फ्रास्टस, जिन्हें प्राचीन वनस्पति विज्ञान का पिता कहा जाता है ने अपनी पुस्तक हिस्टोरिया प्लान्टेरम में अनेक पौधों का वर्णन किया था औषधि विज्ञान में चरक एवं सुश्रुत का नाम आज भी भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा है।

प्राचीन काल से वर्तमान तक लगातार औषधीय पौधों का अध्ययन किया जा रहा है। भारत के पूर्वी दक्षिणी हिमालय के नीलगिरी पहाड़ी में पाये जाने वाले औषधीय पौधों का अध्ययन किया गया है।

आधुनिक युग में बहुत अधिक मात्रा में कुछ औषधीय पौधों को कृत्रिम रूप से उगाया जाता है। औषधीय पौधों को उगाने तथा उनके प्रसंस्करण के लिए अने विश्व विद्यालय, महाविद्यालय एवं अनेक शोध संस्थान स्थिापित किये गये है। भारत के दार्जिलिंग उ0प्र0 के रानीखेत में औषधीय पौधों पर हरबेरियम बनाकर उललेखनीय कार्य किये गये है। चिकित्सा विज्ञान की वह शाखा जिसके

अन्तर्गत हर्बल पादप औषधियों का अध्ययन एवं उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान कहते है तथा वे व्यक्ति जो पादप औषधियों एंव आयुर्वेद औषधियों का अध्ययन करते है। उन्हं आयुर्वेदाचार्य कहते है। चिकित्सा पद्धति में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति बिल्कुल शुद्ध चिकित्सा पद्धति है। आयुर्वेद औषधियों को विभिन्न प्रकार के पौधों से प्राप्त खनिज लवण तथा धातुओं जैसे सोना, चांदी लोहा, पारा, सीसा तथा जहरीले पदार्थ आदि को प्रयोगों में लाया जाता है। इनसे विभिन्न प्रकार के भस्म आदि तैयार किये जाते है किन्तु अधिकांश आयुर्वेद औषधियां शाकीय पौधों को तथा जड़ी बूटियों को कूट–कूट कर, पीसकर, गोलिया, सत्व, मुरब्बा, सीरप आदि बनाकर प्रयोग में लाये जाते है। इसी तरह की चिकित्सा पद्धति को जब यूनान, ग्रीस के चिकित्सक जब अपनाते है तो उन्हें यूनानी चिकित्सक हकीम कहते है।

प्रकृति में पाया जाने वाला प्रत्येक पौधा औषधि है। बसर्ते कि उसके बारे में जानकारी हो। प्रत्येक पोधे में कोई न कोई एल्केलोइड अवश्य होता है जो प्राणियों के शरीर में अपना प्रभाव दिखाता है तथा एन्टीजन के प्रति हानिकारक असर दिखाता है। जैसे उदाहरण के तौर पर प्याज ओर लहसुन में गंधक पाया जाता है जो केन्सर से भी सुरक्षा करता है। नीम में एजेडरीन पाया जाता है जो एन्टीसेप्टिक होता है। इसी तहर इफेड्रा नामक पोधे पर इफेड्रीन नामक रसायन होता है जो हूकफ, कोल्ड कफ, दमा के लिए रामबाण का कार्य करता है।

बुन्देलखण्ड भारत का महत्वपूर्ण क्षेत्र कहलाता है। जो मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के चुनिंदा जिलों को मिलाकर बना है। बुन्देलखण्ड बुन्देलों की वीर भूमि के नाम से जाना जाता है। जहाँ पर बुन्देली बोली का उपयोग होता है और इस बुन्देलखण्ड में महा प्रतापी वीर महाराजा क्षत्रसाल तथा वीर बुन्देला लाला हरदोल सिंह की ख्याति समूचे विश्व में गुजिंत है हमारा बुन्देलखण्ड तरह–तरह के मन्दिरों, इमारतों, स्मारको, मूर्तियों तथा नदी, वन पर्वत, पहाड़ों एवं तालाबों, झीलों तथा पीसफुल लोकेशन्स से भरा है।

भारत का बुन्देलखण्ड क्षेत्र जैव विविधिता का स्वामी है। इस क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं छटा विश्व स्तर पर है। जैव विविधता के संबंध में बुन्देलखण्ड अग्रणी है। मगर अभी इस क्षेत्र में शिक्षा जागरूकता एवं उत्तम साधनों की कमी है बुन्देलखण्ड आयुर्वेद चिकित्सा एवं औषधीय पौधों के उत्पादन में काफी पिछड़ा है जबकि पादप विविधता उपजाऊ भूमि के कारण हमेषा हरा–भरा एवं धनी रहता है।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक डेटा पर आधारित है। प्राथमिक समंको (डेटा) के संकलन हेतु उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से बारीगढ़ एवं लवकुशनगर विकासखण्ड के पुराने, अनुभवी वैद्यों एवं चरवाहों के साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से प्राइमरी डेटा को एकत्र कर वैज्ञानिक पद्धति (निरीक्षण, परीक्षण, वर्गीकरण एवं सारणीयन) के माध्यम से अध्ययन किया गया है। विश्व की रचना के बाद जिस प्रथम मानव की उत्पत्ति हुई उसे आदि मानव कहा गया। जो वर्तमान संदर्भ में बिल्कुल अलग, असभ्य, अशिक्षित, अंध विश्वासी मगर झूट, छल, कपट, से दूर रहा है।

मानव विकास की अवस्था में कुटुम्ब कबीलों, कोल–भीलों का विकास हुआ जो अपने स्वास्थ्य एवं पशुओं की चिकित्सा के लिए केवल औषधीय पौधों पर निर्भर रहा और जिनके प्रयासों से आयुर्वेद चिकित्सा का विकास हुआ बारीगढ़ एवं लवकुशनगर के ग्रामीण, जंगली क्षेत्रों में बसने वाले वैद्य हकीम आयुर्वेद रत्न श्री मिठ्ठू दादा, प्राचीन डॉक्टर श्री स्वामीदीन वैद्य जी तथा आयुर्वेदाचार्य सन्त श्री केशवानन्द जी महाराज एवं सन्त श्री सुखदेवा नन्द जी महाराज एवं आयुर्वेदाचार्य डॉ0 के0 पी0 नामदेव के समपर्क में रहकर जडी बूटियों का स्वयं प्रयोग करके औषधीय महत्व को जाना जिसके माध्यम से यह शोध पत्र तैयार किया गया। साक्षात्कार के समय वैद्यों, ग्रामीणों, हकीमों से कुछ पूछे गये प्रश्न तालिका क्रमांक 1 में दिये जा रहे है।

तालिका क्रमांक–01 प्रश्नावली

क0	व्यक्ति का नाम	स्थान	उम्र	व्यवसाय	रोग का नाम	उपयोगी पोधा एवं पोधे का भाग
1	सुखदेवानन्द महाराज	नाहरपुर	75 वर्ष	समाजसेवा	मधुमेह	गुरमार की पत्ती का पाउडर एवं रस लेना
2	केशवानन्द महाराज	खड़ेहा	72 वर्ष	सन्त एवं समाज सेवा	चर्मरोग	पुमार के बीजों को मठा के साथ लेप लगाना
3	मिठ्ठू दादा	बरूवा	80 वर्ष	ग्रामीण वैद्य	पीलिया	पुनरनवा के तना एवं जड़ की माला पहनना
4	डॉ0 कमलेश नामदेव	परशनियां	50 वर्ष	आयुर्वेदाचार्य	मर्दाना कमजोरी	अश्वगंधा एवं सतावर की जड़ दूध मे पीसकर पीना
5	स्वामीदीन वैद्य	चन्दला	65 वर्ष	कृषक एवं वैद्य	रक्तचाप	कहुआ (कवा) की छाल का काढ़ा पीना
6	अछवा धोबी	लवकुशनगर	75 वर्ष	चरवाहा	बाल झड़ना	काला घमरा एवं धृतकृमारी का लेप
7	कछुआ कोरी	बारीगढ़	65 वर्ष	चरवाहा	मलेरिया	हुर–हुर तथा नीम का काढ़ा पीना
8	रामरती अहिरवार	खेडेहा	70 वर्ष	कृषक	कटने तथा घाव	सहस मूल की पत्ती का लेप
9	मनोहर कुम्हार	सिंहपुर	60 वर्ष	वैद्यगिरी	वातरोग	मदार की पत्ती से गर्म सेक लेना
10	कलुआ गढरिया	सरबई	72 वर्ष	चरवाहा	आंख के रोग	पुमार की पत्ती का रस एवं प्याज का रस ऑख में डालना

प्रश्नावली तथा अनुसूची के दौरान : ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वे के दौरान औषधीय पौधो की सूची तालिका क्र. 02 में दी गई है।

तालिका क्रमांक–02

क्र0	पौधे का स्थानीय नाम	वन्स्पतिक नाम	कुल	स्वभाव	उपयोगी भाग	औषधीय महत्व
1	रतन जोत	जेट्रोफा करकस	यूफोरवियेसी	शाक	बीज एवं पत्ती	रतन जोत के बीजों का तेल उदर शूल, गठिया, खुजली, मसूड़ो की सूजन आदि को ठीक करने में
2	गुरमार	जिमनिमा सिल्वेस्ट्रिस	एसकिल पिडेसी	शाक	पत्ती	पत्तियों का चूर्ण एवं रस मधुमेह रोग के उपचार हेतु उपयोग करते है ।
3	गेंदा	टैगिटस इरेक्टस	कम्पोजिटी	शाक	पत्ती एवं जड़	गेंदा की पत्ती का रस चर्म रोग, कान दर्द, दात दर्द में गुणकारी है जड़ से कृमि नाशक दवा बनती है ।
4	नीम	एजेडरिक्टा इन्डिका	मीलिएसी	वृक्ष	पंचांग	नीम एन्टीसेप्टिक होती है जिसमें एजेडरीन पाया जाता है यह चर्म रोग, मलेरिया तथा कीट एवं कृमि नाशक में उपयोगी है ।
5	अश्व गन्धा	विथानिया सोमनीफेरा	सोलेनेसी	शाक एवं झाड़ी	पंचांग	पत्ती का उपयोग फोड़ा फुन्सी, मोटापा के उपचार में तथा बीजों का उपयोग नशीली दवाओं के निर्माण में तथा जड़ तथा तना पत्ती का चूर्ण अनिद्रा नाशक में करते है तथा जड़ का सत्व वल वर्धक, सेक्स वर्धक के रूप में उपयोगी है ।
6	संख पुष्पी	इवोल्बुलस एल्सीनोइडिस	कॉनबोलबुलेसी	शाक	पंचांग	संख पुष्पी के पत्तों का शाक पौष्टिक स्वादिष्ट स्वास्थ्य वर्धक होता है तथा इसके पंचांग से सीरप बनाया जाता है जो याद दास्त बढ़ाता है ।
7	इफ्रेड्रा	इफ्रेड्रा फोलियेटा	इफ्रेड्रेसी	झाड़ी	पंचांग	यह एक नग्न वीजी पौधा है जो सदाबहार होता है इसमें इफ्रेड्रीन नामक रसायन होता है जो श्वांस, खासी, दमा, हूकफ, काली खांसी, कुकर खांसी के उपचार में उपयोगी होता है।
8	क्वा	टर्मिनेलिया अर्जुना	कोम्ब्रेटेसी	वृक्ष	तने की छाल	कवा की छाल से अजुर्नारिस्ट नामक सीरप बनाया जाता है जो रक्त चाप, ह्रदय रोग में राम बाण का कार्य करता है ।
9	सर्पगन्धा	रोलफिया सपेंन्टाइना	एपोसायनेसी	झाड़ी	पत्ती एवं जड़	सर्पगन्धा की जड़ से रेसरपीन नामक दवा प्राप्त होती है जिसका उपयोग रक्तचाप तथा मानसिक रोगों के उपचार में किया जाता है तथा इसकी गंध से सर्प भी नहीं आता है ।
10	सतावर	एस्परेगस रेसीमोसस	लिलिएसी	सदाबहार आरोही	जड़	सतावर की कन्दिल जड़ों से बल, स्फूर्ति वर्धक, सेक्स वर्धक एवं अतिसार रोधक तथा पौष्टिक औषधियों का निर्माण किया जाता है ।
11	चिरचिटा	इकाइरेंथस एस्पेरा	अमरेनथेसी	शाक एवं झाडी	पंचांग	चिरचिटा की पत्ती को पीसकर कटे घाओं के उपचार में उपयोग करते है, तने की दातुन करने में पायरिया रोग ठीक होता है तथा बीजों का पाउडर खूनी बावासीर को नियंन्त्रित करता है एवं जड़ से बिच्छू काटने की दवा बनती है ।
12	अमलतास	केसिया फिस्टुला	सिसल पिनाइडी	वृक्ष	पत्ती तथा फली	फली का गूदा बच्चों तथा स्त्रियों के पेट साफ करने में मधुमेह के उपचार में उपयोगी है एवं पत्तियों का रस दाद खाज खुजली तथा चर्म रोग में उपयोगी है ।
13	हल्दी	कर्कुमा लोंगा	जिन्जी बरेसी	शाक फसल	राइजोम	हल्दी का राइजोम पीसकर पाउडर बनाते है जिसका उपयोग चर्म रोग त्वचा निखार एवं एन्टीसेप्टिक एवं एन्टीबायोटिक के रूप में उपयोग करते है । इसके पाउडर का लेप चूने के साथ लगाने पर दर्द एवं सूजन ठीक हो जाता है । मधुमेह तथा बदन दर्द में गुणकारी है तथा

						प्रतिरोधक क्षमता प्राप्त होती है ।
14	जामुन	यूजेनिया जेम्बोलाइना	मिर्टेसी	वृक्ष	पत्ती फल बीज	पत्ती का रस फल एवं गुठली का चूर्ण मधुमेह रोग को नियंत्रित करता है तथा फल पौष्टिक होता है ।
15	हुरहुर	क्लिओम विसकोसा	केपेरीडेसी	शाक	पंचांग	पौधे की पत्ती का काढ़ा मलेरिया तथा टाइफाइड को ठीक करता है इसके बीज उत्तेजना प्रदान करते है ।

निष्कर्ष

आयुर्वेद चिकित्सा एलोपैथिक चिकित्सा से सरल और सहज है एलापैथिक चिकित्सा अनेक साइडइफैक्ट रोगी को भुगतने पड़ते है तथा उसके रोग का स्थायी इलाज नहीं होता है जबकि हर्बल चिकित्सा में रोगी को क्रमिक एवं स्थायी ईलाज प्राप्त होता है जो साइडइफैक्ट से मुक्त होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *औस ज्ञान्या सीमैप सी एस आई आर लखनऊ 226015–2010*
2. *अरजरिया अमिता एण्ड अरजरिया ओपी इथनो बाटेनिकल आब्सरवेसन आफ सम फोरेस्ट ट्री आफ छतरपुर डिस्ट्रिक मध्य प्रदेश 221–222 सेमीनार 13 फरवरी 2013*
3. *अग्रवाल एस बी यूनीफाइड बोटनी स्तानक*
4. *गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस गीता प्रेस गोरखपुर यू0पी0 2001*
5. *गनेसन एस 2008 ट्रेडीशनल ओरल केयर मेडीसनल प्लान्ट्स सर्वे आफ तमिलनाडू नेचुरल प्रोडेक्ट रेडियेन्स 7 (2): 166–172*
6. *मेहता ए सेठिया एन के मेहता सी साह जी बी एन्टी अर्थराइटिस एक्टीविटी आफ रूट्स आफ हेमीउस्मिस इन्डिकस आर–बीआर (अन्नतमूल) इन रेट्स एसियन पैक जे ट्राप मेड 2012:5(2): 130–5*
7. *राव आर 1996 ट्रेडीशनल नॉलेज एण्ड सस्टेनेबिल डवलपमेन्ट की रोल आफ इथ्नो नोजिस्ट जे इथनो बोटनी 8, 14–24*
8. *श्रोत्रिय निरंजन एण्ड अर्चना यूनीफाइड बाटनी रामप्रसाद एण्ड सन्स भोपाल*
9. *शेख पी जेड स्टडी आफ एन्टी इम्फला मेन्टरी एक्टिविटी आफ इथनोलोजिक एक्सट्रेक आफ हेमीडेसमिस इनडिकस रूट इन एक्यूट, सब क्रोनिक एण्ड क्रोनिक इम्फलामेशन इन एक्सपेरीमेन्टल एनीमल्स इन्टरनेशनल जनरल आफ फारमेसी एण्ड लाइफ सांइस 2011:2 (10) 1154–1173*
10. *सिंह ए दुग्गल, एस सिंह जे एण्ड केटे खाये एस एन इन्साइड प्री व्यू आफ इथनों फारमेकोलोजी आफ सिसरपेलोस पेरेइरा लिन इन्टरनेशलन जर्नल आफ बायोलॉजिकल टेक्नोलोजी 2010:1 (1):114–120*